मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 54 अंक 11 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
नवम्बर 2018 बहाई वर्ष : 175

विश्व न्याय मन्दिर

"बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा मन में बैठाया गया आचरण का उच्च स्तर किसी समझौते को स्वीकार नहीं कर सकता; इसे कदापि गिराया नहीं जा सकता और सभी को इसकी उत्कृष्ट ऊँचाइयों पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करनी चाहिये; दूसरी ओर यह स्वीकार किया जाना चाहिये कि मनुष्य होने के नाते हम पूर्णता से बहुत दूर हैं; सभी से जो अपेक्षित है वह है सच्चा दैनिक प्रयास। दंभ से दूर करने की आवश्यकता है।"

–28 दिसम्बर 2010

बंगलूरू में मनाया गया हाइफा दिवस

7 अक्टूबर की शाम बंगलूरू के बहाइयों के लिए एक यादगार शाम थी। 23 सितम्बर, 1918 को हुई हाइफा की लड़ाई की जीत का शताब्दी उत्सव बहाइयों द्वारा इंटर रिलिजस हार्मनी मूवमेंट के साथ मिलकर मनाया गया।

इस अवसर पर इस्राइल की वाणिज्यदूत सुश्री दाना कुर्श, बंगलूरू के आर्कबिशप डॉ. पीटर मचाडो, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक श्री भास्कर राव, कनाडा की राजदूत सुश्री कैरोलिन के अलावा विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि और बंगलूरू के बहाई उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ कर्नाटक संगीत और बहाई प्रार्थना से हुआ। प्रार्थनाओं के उपरान्त डॉ. मचाडो ने एक प्रेरणात्मक स्वागत भाषण दिया। इस शाम का मुख्याकर्षण एक प्रस्तुति थी जो मैसूर लांसर्स और हाइफा की लड़ाई में उनकी भागीदारी पर थी। यह श्री भास्कर राव द्वारा तैयार की गई थी, जिसमें दिखाया गया कि कैसे लांसर्स ने गौरवपूर्ण तरीके से अनेक बाधाओं को पार करते हुए यह जीत हासिल की थी और जर्मन तथा तुर्की के खिलाफ, जिनके पास अनेक परिष्कृत हथियार थे, केवल घुड़सवारी और सीमित हथियारों से यह लड़ाई जीती गई और अब्दुलबहा तथा हाइफा को मुक्त कराया गया।

इस प्रस्तुति के बाद सुश्री दाना ने भारत और इस्राइल के संबंधों पर वार्ता प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि यह लड़ाई जैसे बहाइयों के लिए महत्वपूर्ण थी वैसे ही यहूदियों के लिए भी थी। यह इस्राइल देश के गठन के लिए एक महत्वपूर्ण कारक था। आज हाइफा में विभिन्न धर्मों का अनुसरण करने वाले लोग



बंगलूरू में आयोजित हाइफा दिवस के कार्यक्रम में उपस्थित अनेक गणमान्य अतिथियों के साथ बहाई मित्रगण

रहते हैं, एक ही इमारत में यहूदी, ईसाई, मुस्लिम एक साथ रह रहे हैं और दुनिया के लिए विविधता में एकता का आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं।

बहाई प्रतिनिधि पल्लब गुहा ने बताया कि मैसूर लांसर्स जीत के बाद अब्दुलबहा से मिले और उन्होंने उनको सलाह दी कि जब वे वापस भारत जायेंगे तब वास्तविक लड़ाई आरम्भ होगी और वो होगी आध्यात्मिक लड़ाई।

इस अंक में

महिलायें सशक्त हों, परितर्वन लायें

देहरादून की स्थानीय आध्यात्मिक सभा ने 30 सितम्बर 2018 को व्यापक समुदाय के लोगों में सार्वजनिक कार्य के माध्यम से जागरूकता और प्रेरणादायक भागीदारी के लिए देहरादून के शुभम होटल में "सार्वजनिक कार्य के माध्यम से वैश्विक परिवर्तन : महिला सशक्तिकरण" विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 6 मीडिया के लोगों सहित 42 मित्रगण शामिल हुए।



देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी (इनसेट में स्थानीय आध्यात्मिक सभा के साथ डॉ. जनक पल्टा मैकगिलिगन)

ये सभी प्रमुख बुद्धिजीवी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले और समाज में लाभकारी परिवर्तन लाने के लिए विभिन्न गतिविधियों में शामिल रहे हैं।

कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थनाओं से हुई। उसके उपरांत एम. के. भार्गव ने उस दिन के विषय और भविष्य के लिए दृष्टिकोण पर एक पॉवर प्वायंट प्रस्तुति हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में दी। इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. जनक पल्टा मैकगिलिगन का स्थानीय सभा के सचिव कुशल सिंह महार ने फूल भेंट कर स्वागत किया।

डॉ. मैकगिलिगन ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से बहाई धर्म की शिक्षाओं के आधार पर आध्यात्मिक सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों पर मानवजाति के विकास की आवश्यकता के बारे में बात की। उन्होंने बहाई धर्म के बारह मुख्य सिद्धांतों के बारे में भी बताया। बहाई लेखों का उदाहरण देते हुए उन्होंने मानवजाति की तुलना एक पक्षी से की जिसके दो पंख–स्त्री और पुरुष हैं और पक्षी को उड़ने के लिए दोनों पंखों का समान रूप से मजबूत होना चाहिए।

उन्होंने महिलाओं और बच्चों के खिलाफ होने वाले दुष्कर्म और हिंसा की घटनाओं के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए परिवार में लड़कों को शिक्षित करने के लिए आध्यात्मिक मूल्यों की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि वे बुरे व्यक्ति के रूप में बड़े न हों, बल्कि समाज में कमजोर लोगों के संरक्षक के रूप में बड़े हों।

चित्रों के माध्यम से उन्होंने महिला सशक्तिकरण की दिशा में अपनी 34 वर्षों की यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने इंदौर में अपने पति स्वर्गीय जिमी मैकगिलिगन के साथ 302 गांवों में काम किया और उन्हें प्रशिक्षित किया। साथ ही छह हजार से अधिक ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में सहायता की, जहां उन्होंने सौर कुकर, पैनल और ड्रायर के बारे में बताया।

शेष पृष्ठ 3 पर

मणिपुर में संस्थागत बैठक

मणिपुर के इम्फाल और पंगंतबी में 16 सितम्बर 2018 को बहाई भवन में क्षेत्रीय संस्थागत बैठक का आयोजन किया गया। इम्फाल में आयोजित इस बैठक में 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें इम्फाल की तीन स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों, क्लस्टर विकास समिति, क्लस्टर विकास फेसिलिटेटर, होमफ्रंट पायनियर, प्रशिक्षण संस्थान बोर्ड के सदस्य, क्षेत्रीय बहाई परिषद, क्षेत्रीय समन्वयक और सहायक मण्डल सदस्य शामिल थे।



इम्फाल में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

पंगंतबी में आयोजित बैठक में क्लस्टर विकास समिति के सदस्य, क्लस्टर विकास फेसिलिटेटर, सहायक मण्डल सदस्य और तीन स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों सहित लगभग 20 मित्रों ने भाग लिया।


पंगंतबी में हुए कार्यक्रम में शामिल मित्रगण

कार्यक्रम का आरम्भ प्रार्थनाओं से हुआ। प्रार्थनाओं के उपरांत दो संदेशों स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की भूमिका और कोष का अध्ययन किया गया। स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की भूमिका और समुदाय के परिवर्तन की समीक्षा की गई। इस पर चर्चा हुई कि प्रत्येक गतिविधि में प्रत्येक सदस्य की निजी भागीदारी आवश्यक है। सभा के सभी सदस्यों को मूल गतिविधियों पर ध्यान देना होगा और वास्तविक मामलों पर परामर्श करना होगा और विकास की प्रक्रिया को प्रेमपूर्वक और धैर्यपूर्वक पोषित करना होगा।

उपस्थित मित्रों ने कोष के बारे में अध्ययन किया, संसाधनों का सही आंकलन और उपयोग करने के लिए सभाओं की बढ़ती क्षमता, कोष एकत्र करने में संस्थाओं के सभी सदस्यों और अनुयायियों की भूमिका, कोष की स्थिति के बारे में बताना आदि साझा किया। इस बात पर भी चर्चा की गई कि निर्धारित राशि कैसे प्राप्त की जाये और इस बात पर भी परामर्श किया गया कि उदारतापूर्वक और नियमित रूप से कोष में दान देने के लिए मित्रों को शिक्षित किया जाये, ताकि व्यक्तिगत योगदान देने वालों की संख्या में वृद्धि हो, जिससे कोष में योगदान देने वाली स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की संख्या में भी वृद्धि होगी।

उपस्थित सभी स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं ने अपने क्षेत्र की चुनौतियों, उपलब्धियों और अनुभवों को एक–दूसरे से साझा किया और चल रहीं मूल गतिविधियों के बारे में भी बताया।

एक सत्र में बहाई सम्पत्ति के बारे में भी चर्चा की गई, जिसमें मित्रों को बताया गया कि हम सभी कैसे अपनी संपत्तियों के लिए स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना को महसूस कर सकते हैं।

झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ

• जमशेदपुर स्थित बिरसानगर जोन–6 समुदाय के किशोरों द्वारा 2 अक्टूबर, 2018 को सेवा परियोजना के अंतर्गत साफ–सफाई का कार्यक्रम चलाया गया, जिसमें 8 किशोरों ने भाग लिया। किशोरों का उद्देश्य एक स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना है। इसकी प्रेरणा उन्हें निरंतर रूप से किशोर समूह में भाग लेने से प्राप्त हुई जब वे साथ मिलकर किशोरों की पुस्तकें पढ़ते हैं और विचारों का आदान प्रदान करते हैं। उन्होंने इसकी शुरूआत अपने क्षेत्र में बढ़ रही गंदगी को दूर करके एक स्वच्छ वातावरण बनाने से की, क्योंकि वे इन बातों से परिचित हैं कि अगर हमारा घर, मोहल्ला साफ सुंदर रहता है तो कई प्रकार की गंभीर बीमारियों से हम बचे रहेंगे। इनकी इस सेवा से अभिभावकगण काफी खुश हुए और इस प्रकार के कार्यक्रम एवं किशोरों की मदद का पूरा भरोसा दिलाया।


बिरसानगर समुदाय के बच्चे अपने क्षेत्र में सफाई करते हुए

• जमशेदपुर स्थित बहाई केन्द्र में दो दिवसीय राज्य स्तरीय संयोजकों एवं सहयोगियों की बैठक का आयोजन प्रशिक्षण संस्थान मण्डल झारखण्ड द्वारा 22 एवं 23 सितम्बर 2018 को किया गया। इस बैठक में कुल 26 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक क्लस्टर में गत् तीन महीनों की सीखों, चुनौतियों, को संख्यात्मक एवं गुणात्मकता के आधार पर समुदायों का आध्यात्मिक स्वरूपों को जानना एवं आगामी तीन महीनों के लिए व्यावहारिक योजना को तैयार करना एवं इन योजना की प्राप्ति हेतु आवश्यक कार्य प्रणाली की रुपरेखा तैयार करना था। साथ ही, पाँच वर्षीय योजना में झारखण्ड को प्राप्त लक्ष्यों की समझ को बढ़ाना एवं उसका मूल्यांकन करना एवं बचे हुए लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आवश्यक कार्य रुपरेखा को तैयार करना, खासकर आगामी तीन महीनों के लिए। प्रथम मील, द्वितीय मील और तृतीय मील की अवधारणाओं को स्मरण में लाना और आगामी बाब, बहाउल्लाह के जन्मोत्सव की आवश्यक तैयारी से परिचित होना भी था। इन सभी तथ्यों को बारीकी से समझने के लिए बैठक में 1 जून 2018 का परिपत्र, 29 दिसम्बर, 2015 के चयनित अंशो का अध्ययन और समुदायों का आध्यात्मिक स्वरूप पत्रिका का अध्ययन किया गया। वर्तमान में झारखण्ड के पास 10 पीजी क्लस्टरों का लक्ष्य है, जिसमें से 7 पूरे हो चुके हैं तथा बचे हुए 3 पीजी क्लस्टरों में से आगामी तीन महीनों में तमाड़ क्लस्टर को आईपीजी करने की आवश्यक


जमशेदपुर में आयोजित राज्य स्तरीय बैठक के प्रतिभागी

शेष पृष्ठ 4 पर

सिक्किम में संस्थागत बैठक का आयोजन

सिक्किम और दार्जिलिंग की क्षेत्रीय बहाई परिषद ने क्षेत्र के प्रशिक्षण संस्थान मंडल के सदस्यों, सहायक मंडल सदस्यों, क्षेत्रीय संयोजकों और सहयोगियों तथा सांख्यिकी पदाधिकारियों की एक संयुक्त बैठक सितम्बर में आयोजित की। इस बैठक में कुल 23 मित्र शामिल हुये।

बैठक में मार्गदर्शक के रूप में सलाहकार राजन सावंत उपस्थित थे, जिन्होंने रिज़वान 2018 के संदेश और अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के 3 मई 2018 के संदेश के पाठ के बाद प्राप्त अंतर्दृष्टि और अवधरणाओं को समझना आसान कर दिया।

इस संयुक्त बैठक का मुख्य उद्देश्य पाँच वर्षीय योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में तेज कदम बढ़ाना था। जैसा कि विश्व न्याय मंदिर ने अपने संदेशों में कहा कि यह पाँच वर्षीय योजना "एक कठिन निर्णायक काल" है। अगर हम दुनिया की वर्तमान स्थिति पर विचार करें, चाहे वह सामाजिक हो अथवा राजनीतिक, आर्थिक हो या आध्यात्मिक हर ओर विघटन का शोर ही सुनाई पड़ता है, ऐसा लगता है कि सब–कुछ बिखर गया है, विनाश जैसे एक आम बात हो गई है। पूरी दुनिया में एक अजीब–सा कोलाहल मचा है। ऐसे में कुछ और नहीं, बहाई शिक्षाओं का प्रभाव ही एक स्वर्णिम भविष्य हमें देगा। इस विश्वास के साथ दो दिनों का विचार–विमर्श चला। बैठक का निष्कर्ष यह निकला कि अब क्षेत्र के बहाई मित्र तीन चरणों में काम करेंगे। पहला चरण होगा 18 महीनों का प्रसार चक्र, जिस दौरान अधिक–से–अधिक लोगों को प्रभुधर्म का संदेश देने की कोशिश की जायेगी, दूसरा चरण 24 महीनों का होगा जब सुगठन के काम किये जायेंगे और 18 महीनों के अगले चक्र में प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करने के साथ–साथ आगामी योजना की तैयारियां की जायेंगी।

एक जीवंत समुदाय कैसा होता है, इस अवधारणा का अनुभव साझा कर उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत किया गया। बिहार के कुछ उदाहरण देते हुये कहा गया कि अब हथवन गाँव के किसी घर में जब नन्हा मेहमान आता है या फिर किसी घर में मृत्यु हो जाती है तो बहाई प्रार्थनाओं के लिए आमंत्रित किया जाता है। इतना ही नहीं, बहाई शिक्षायें समुदाय के जीवन में कुछ इस तरह से घुल–मिल गई हैं कि अब वर–वधू के माता–पिता अपनी संतानों का विवाह बहाई विधि–विधान से करना अधिक पसंद करते हैं। विधि की सरलता और विवाह के दौरान प्रार्थनाओं द्वारा बनाये गये आध्यात्मिक माहौल में उनकी अधिक रूचि होती है।

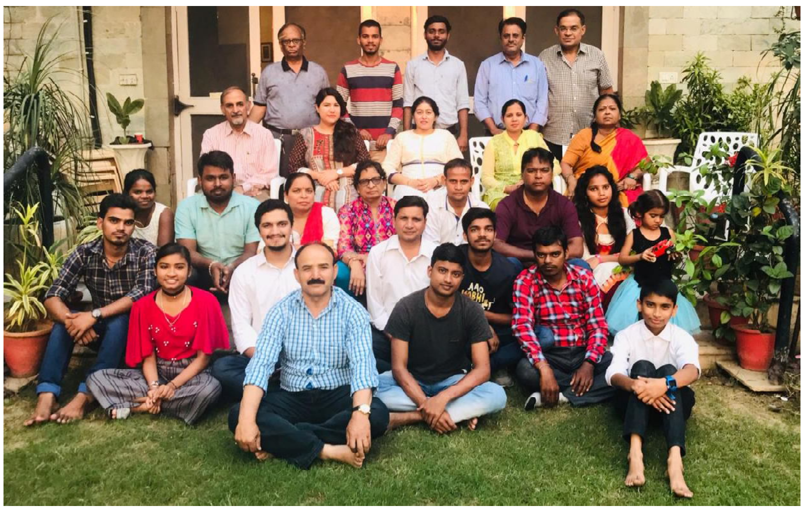
एक अन्य उदाहरण एक दूसरे गाँव का है जहाँ सालाना यात्रा निकालने की प्रथा है। इस यात्रा के लिये चंदे में आये पैसों को लेकर हर साल घोटाला होता था, यात्रा को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने की जगह कुछ लोग शराब पी कर पूरे माहौल को बिगाड़ दिया करते थे, अक्सर खाने के समय विभेद कर दिया जाता था, उच्च वर्ग के लोग पंडाल में बैठकर खाना खाते थे और निम्न वर्ग के लोगों को सड़क के किनारे दो पंक्तियों में बैठाकर भोजन परोसा जाता था। समाज को विभाजित करने वाली इस प्रथा से गाँव के लोग बहुत नाराज़ थे। जब समस्याओं का कोई समाधान नहीं निकला तो ग्राम प्रधान ने वहाँ की आध्यात्मिक सभा से पूरी यात्रा को संचालित करने का निवेदन किया, ख़ास तौर से आध्यात्मिक सभा के कोषाध्यक्ष से चंदे की राशि का हिसाब रखने का आग्रह किया। पहले तो कोषाध्यक्ष ने इस अतिरिक्त कार्यभार को खुशी–खुशी सम्हाला, लेकिन बाद में बहाई सिद्धांत – मानवजाति की एकता – को ध्यान में रखते हुये तब तक इस कार्यभार को स्वीकारने से इंकार कर दिया जब तक किसी भी मादक पदार्थ का सेवन यात्रा के दौरान, यात्रा के पहले और यात्रा के बाद रोक न दिया जाये और उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग को विभाजित कर भोजन न परोसा जाये। ग्राम प्रधान को आध्यात्मिक सभा के कोषाध्यक्ष की यह शर्त अच्छी लगी और तत्काल उन्होंने घोषणा कर दी कि यात्रा के समय कोई भी शराब नहीं पियेगा और भोजन के लिये अलग–अलग स्थान नहीं निर्धारित किया जायेगा, जिसको जहाँ जगह मिले वहीं भोजन के लिये बैठेगा। पूरे गाँव के लोगों को यह व्यवस्था अच्छी लगी और इस प्रकार सदियों पुरानी प्रथा को ख़त्म कर दिया गया।

दो दिनों की इस बैठक में बाब और बहाउल्लाह की आगामी जयंतियों के उत्सव मनाने पर भी विचार किया गया। इस बात पर सहमति हुई कि सिक्किम और दार्जिलिंग क्षेत्रों में कुल 41 स्थानों पर जयंती–समारोह आयोजित किये जायेंगे। इन सभी समारोहों का उद्देश्य होगा, अधिक–से–अधिक लोगों को बहाउल्लाह से जोड़ने का, जिनमें बच्चे, किशोर, युवा और वयस्क, सभी शामिल होंगे।

बैठक के दौरान अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के 3 मई, 2018 के पत्र से प्रोत्साहित हो कर एक कार्य–योजना बनाई गई, जिसमें यह तय किया गया कि किस क्षेत्र में कौन और कब जायेंगे।

फरीदाबाद में क्लस्टर विकास समिति की बैठक का आयोजन

क्षेत्रीय बहाई परिषद पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू–कश्मीर ने 29 और 30 सितम्बर को फरीदाबाद में दो दिवसीय क्लस्टर विकास समिति की बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में फरीदाबाद, मौहाली चंडीगढ़ और गुरुग्राम के 25 मित्रों ने भाग लिया। नन्दकिशोर और श्री सागर सूद ने परिवार की नई अवधारणा के बारे में चर्चा की और बताया कि यह कैसे क्लस्टर में भक्तिपरक बैठकों को बढ़ाने में मदद करता है। इसके अलावा नंदकिशोर ने हुकूकुल्लाह विधान के महत्व के बारे में भी बताया। डॉ. अर्जुन रस्तोगी ने कहा कि हमें प्रभुधर्म के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करना चाहिए।



फरीदाबाद में आयोजित बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

क्षेत्रीय बहाई परिषद उत्तरप्रदेश, दिल्ली और उत्तराखण्ड द्वारा तैयार एक दस्तावेज "क्लस्टर विकास समिति के कार्य" पर चर्चा की गई। एक साथ अध्ययन करते समय यह महसूस किया गया कि क्लस्टर विकास समिति का दायरा व्यापक है और कैसे किसी विशेष क्षेत्र में कितनी अच्छी सेवा दी जा सकती है। इसके अलावा, क्लस्टर विकास समिति के व्यवस्थित कामकाज जिसमें परिकल्पना, रणनीतियाँ, लक्ष्यों और पद्धतियों के विश्लेषण की जांच पर बल दिया गया।

महिलायें सशक्त हों, परिवर्तन लायें

पृष्ठ 1 का शेष

उन्होंने उत्तराखण्ड में पर्यावरण के संरक्षण के लिए स्थायी ऊर्जा के बारे में महत्वपूर्ण सुझाव दिये। प्लास्टिक का उपयोग करने के हानिकारक प्रभाव, अपशिष्ट प्रबंधन और रोगों की रोकथाम के बारे में भी बताया।

तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम के उप–महाप्रबंधक आशीष गर्ग ने समाज और देश के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए बालिकाओं को शिक्षित करने, संरक्षित करने और सशक्त बनाने की आवश्यकता के बारे में बात की। उन्होंने मानवजाति के कल्याण के लिए पर्यावरण को संरक्षित और साफ रखने की आवश्यकता के बारे में बताया। श्री गर्ग ने देहरादून में सार्वजनिक कार्य में 'अपशिष्ट प्रबंधन के काम में लगे लोगों' की भूमिका के बारे में बताया और अपशिष्ट प्रबंधन में उनके प्रयासों में उनका साथ देने के लिए अन्य लोगों को भी आमंत्रित किया।

श्रीमती फरीन भार्गव ने अपने वक्तव्य में कहा कि पतियों को अपनी पत्नियों का समर्थन करने और बच्चों के प्रति अपने दायित्व को पूरा करने के लिए उनको शिक्षित करना सबसे प्रमुख प्राथमिकता है। विशेष रूप से उन्होंने बुद्धिजीवियों में जागरूकता लाने और तृणमूल स्तर पर सार्वजनिक कार्य के लिए संयुक्त प्रयासों में शामिल होने के लिए दूसरों को संगठित करने की आवश्यकता पर बल दिया। अंत में उन्होंने देहरादून बहाई समुदाय की ओर से उपस्थित सभी मित्रों का इस कार्यक्रम में आने के लिए धन्यवाद किया।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

राष्ट्रीय कार्यालय में सेवा का अवसर

उन मित्रों के आवेदन लिये जा रहे हैं जो राष्ट्रीय बहाई कार्यालय में अपनी सेवायें प्रदान करना चाहते हैं और निम्नलिखित स्थान को भरने के लिए संबद्ध योग्यता और अनुभव रखते हैं :

नियंत्रक (कंट्रोलर)/सहायक नियंत्रक

दायित्व

- राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, परिषदों सहित, कार्यालयों और एजेंसियों की बजट प्रक्रिया को देखना
- राष्ट्रीय सभा के सभी कार्यालयों, विभागों और एजेंसियों के साथ–साथ परिषदों के बजट की नियमित रूप से निगरानी करना।
- जब अनुरोध किया जाए तब राष्ट्रीय सभा के विभिन्न मामलों के लिए सलाहकार के रूप में कार्य करना और सलाह प्रदान करना
- आंतरिक और बाहरी लेखा परीक्षण प्रक्रिया की देखरेख करना
- वित्त मामलों में कानूनी अनुपालन सुनिश्चित करना
- वित्तीय प्रतिबद्धताओं की समीक्षा करना

आवश्यकता योग्यता

- व्यक्ति को स्नातक होना चाहिए और लेखा (अकाउटिंग) का ज्ञान होना चाहिए
- व्यक्ति अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में संवाद करने में समक्ष होना चाहिए
- व्यक्ति को कम्प्यूटर की बुनियादी जानकारी होनी चाहिए और टैली सॉफ्टवेयर का भी ज्ञान होना चाहिए
- व्यक्ति हमेशा सीखने को तत्पर होना चाहिए
- व्यक्ति को इस क्षेत्र में कार्य का पहले से अनुभव है तो यह बहुत अच्छा होगा

इच्छुक व्यक्ति कार्मिक विभाग को personnel@ibnc.in पर लिखें और उसकी एक प्रति nsaindia@ibnc.in पर भी भेजें।

झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ

पृष्ठ 2 का शेष

रणनीतियाँ तैयार की गईं।

• मानगो क्लस्टर स्थित डिमना बस्ती में दूसरी समीक्षा बैठक का आयोजन क्लस्टर विकास समिति एवं संयोजकों द्वारा 16 सितम्बर 2018 को किया गया। इस बैठक में क्लस्टर के 65 मित्रों ने भाग लिया। क्लस्टर विकास समिति एवं सहयोगी द्वारा प्रार्थना सभाओं, गृह भ्रमण, शिक्षण से सम्बंधित गत् तीन महीनों की सीख एवं चुनौतियों को उपस्थित मित्रों के साथ साझा किया। साथ ही, उपस्थित संस्थान संयोजको द्वारा भी चल रही बच्चों की कक्षा, किशोर कक्षा, अध्यनवृत कक्षा से सम्बंधित अनुभवों को साझा किया। अनुप्रेरकों, शिक्षकों, सह–शिक्षकों, अभिभावकों द्वारा भी अपनी कक्षाओं एवं हो रहे परिवर्तनों जैसे माता–पिता की बातें मानना, पढाई में रुचि लेना, बड़ों का आदर करना इत्यादि सम्बंधित अनुभवों को साझा किया किया गया। साथ ही, बच्चों, किशोरों द्वारा गीत–संगीत भी प्रस्तुत किये गये और योजना की तरफ ध्यान देते हुए आगामी तीन महीनों के लिए योजना बनाई गई, जिसमें 30 नये मित्रों को संदेश देने की योजना शामिल है।

पटना में सामाजिक क्रियाविधि पर सेमिनार

पटना में सामाजिक क्रियाविधि की तैयारी से संबद्ध सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें 12 समुदाय–समूह से कुल 33 मित्रों ने भाग लिया। ज्ञातव्य हो कि बिहार में पीएसए सेमिनार का आयोजन वर्ष–2013 से ही हो रहा है। सहशिक्षक श्री शाहज़ाद आलम के मार्गदर्शन में प्रथम बैच में कुल 36 मित्रों ने भाग लिया था। प्रथम बैच की समाप्ति के पश्चात यह सुनिश्चित किया गया कि भविष्य में होने वाले सेमिनारों के लिए स्थानीय स्तर पर ही सहशिक्षक तैयार किये जायें। अतएव, 5 मित्रों को स्थानीय सहशिक्षक के रूप में तैयार किया गया, जो द्वितीय बैच एवं उसके बाद के मित्रों के लिए सेमिनार का आयोजन करते हैं। विदित हो कि द्वितीय बैच का शुभारंभ वर्ष–2016 में हुआ था, जिसमें लगभग 40 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज़ की थी। इसी श्रृंखला में बहाई भवन, पटना में आयोजित सेमिनार में दो पुस्तक– *''पदार्थ का उष्मीकरण और शीतलीकरण''* तथा *''स्वास्थ्य एवं रोग''* का अध्ययन किया गया।

''पदार्थ का उष्मीकरण एवं शीतलीकरण'' पुस्तक में मित्रों ने विज्ञान की अवधारणाओं पर विमर्श किया जिसमें विज्ञान क्या है, यह क्या करता है, यह किस प्रकार मानवजाति की सहायता करता है। सबसे आनन्ददायक बात यह थी कि इस पुस्तक में विज्ञान से जुड़े विषयों के अलावा कई अन्य आध्यात्मिक सिद्धांतों पर भी गहनता के साथ परामर्श किया गया। इसके अतिरिक्त, विज्ञान में स्त्रियों की अवधारणा पर चिन्तन करते हुए इस बात पर भी परामर्श किया जा रहा था कि गत कुछ शताब्दियों में वैज्ञानिक अनुसंधान में महिलाओं की एक वृहत् संख्या को नज़र अंदाज किया गया जबकि यदि उक्त कार्य में स्त्री और पुरुष दोनों की सहभागिता हो तो निःसंदेह विज्ञान विकास के एक और नये क्षितिज की ओर कदम रखता।

मित्रगण जब दूसरी पुस्तक *''स्वास्थ्य एवं रोग''* का अध्ययन कर रहे थे तो उस दौरान वे सामुदायिक जीवन की प्रक्रियाएँ, ज्ञान प्राप्त करना, लोगों के समुदाय के बारे में सीखना तथा स्वास्थ्य एवं उससे संबंधित अन्य विषयों को लेकर अपने ज्ञान को बढ़ाया तथा यह समझ विकसित की कि यदि हम स्वयं एवं अपने परिवार व समुदाय का बखूवी ख्याल रखते हैं, उसका अवलोकन व अध्ययन करते हैं तब हम स्वयं अपने परिवार तथा समुदाय की छोटी–से–छोटी बिमारियों को दूर करने में सक्षम होते हैं।

बहाई विवाह



लखनऊ, उत्तर प्रदेश के श्री शैलेन्द्र राणा और गंगटोक, सिक्किम की सुश्री चन्द्रा दत्ता का विवाह बहाई विधिविधान के अनुसार 14 अक्टूबर, 2018 को गंगटोक में सम्पन्न हुआ।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.11. 2018
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)